भजन

पिया मेहरों के सागर हैं,करते हैं वो मेहेरें हंसी
दुख चाहे जला डाले,छूटे न कभी भी यकीं

1–हादी की हिदायत पे,हद पर ही खड़े हैँ हम
हद बेहद हो जाये,इसका कोई गम ही नहीं

2– साकी से गुजारिश है,जलवों को रवां रखना
महफिल में सरूर आये, इतना ही कि हद हीनहीं

3– जलवों में नया रंग तो,महबूब ही भरते हैं
गर सामने बैठे रहें, बांधे तो किसी के नहीं

4– जो यह पर्दा न होता सनम,थी न माया की मजबूरी
मस्ती की हकीकत तो, ब्यां करने का दम हीनहीं

5– यह बिखरी हुई तारें,जरा जोड़ के देखो तो
मयखाना उलट जाए, इसमें कोई शक ही नहीं